पत्नी-चालीसा

पं. फूलचन्द्र पाण्डेय
ग्राम- ऊँचगाँव, जनपद- जौनपुर

जय जय जय पत्नी महरानी। हम पै किरपा करौ भवानी॥१॥
तुम से नाम हमारा ऊँचा। तुँहीं नीच तो सर है नीचा॥२॥
तुम से ही घर मथुरा काशी। तुम ही घर के सत्यानाशी॥३॥
अपनाई तो झेली सदमा। छोड़ देइ तो लड़ी मुकदमा॥४॥
फरमैशी न मिला अभूषण। घर में फैला ध्वनि प्रदूषण॥५॥
हम जानेन कि तुम अबला हौ। लेकिन बहुतै बड़ी बला हौ॥६॥
नाथ नाथ कहि के यस नाथिउ। आज अनाथ किहे तूँ बाटिउ॥७॥
लाइ के छोड़िउ कौन डगर मा। भाँवर लैके फसेन भँवर मा॥८॥
दादा सोचेन बहू जो आए। पूरे घर का स्वर्ग बनाए॥९॥
जब से घर मा किहिउ निवासा। दादा केहेन सरग के बासा॥१०॥
सुनि लेउ देबी करुण पुकारा। जल्दी छोड़उ पिण्ड हमारा॥११॥
तुलसी बाबा नाम कमाइन। जब पत्नी से मुक्ती पाइन॥१२॥
तुम उपकार मायके कीन्हा रुपया पैसा सब कुछ दीन्हा॥१३॥
बिबिध रूप धरि प्रेम दिखावहु। विकट रूप धरि देह जरावहु॥१४॥
गुस्सा तोहरी नाक बिराजै। हाथे झाड़ू बेलन साजै॥१५॥
हमरा हाथ पैर सब काँपै। आपन तेज सम्हारो आपै॥१६॥
जो भी तुमका आँख दिखावै। का मजाल पत्नी सुख पावै॥१७॥
या तो हमरी तुम हौ दासी। या तो हम तुम्हरे चपरासी॥१८॥
धरम के पत्नी बनी अहा तूँ। हमरे सिर पे तनी अहा तू॥२०॥
अइसन भा बिपदा के ठालय। तोहरे हाथ गिरिह मन्त्रालय॥२१॥
साधु सन्त सब तुम्हरे डर से। भाग गए जंगल मा घर से॥२२॥
तुम ही दुर्गा तुम ही काली। तुम्हरी महिमा बड़ी निराली॥२३॥
राम कुरावन तुम्हरे पासा। सब के सब पत्नी के दासा॥२४॥
जो पत्नी चालीसा गावै। सबसे पहिले झंझट पावै॥२५॥
संकट से तुम हमे उबारो। अपने मैके जल्द सिधारो॥२६॥
राम करै यस मिलै न कोई। छूटै पिण्ड महासुख होई॥२७॥
जो पति रहै तुम्हारी सरना। उपला चौका बरतन करना॥२८॥
सुरा सुन्दरी निकट न आवै। जे पत्नी के नाम सुनावै॥२९॥
तुम हौ हमरी भाग्य बिधाता। हमरे दस बच्चन की माता॥३०॥

संकट हरौ मिटै सब पीरा। सुमिरै तुम को ई पति बीरा॥३१॥
फेंकौ अब न कौनो पाँसा। चलत अहै अब अन्तिम श्वाँसा॥३२॥
जय जय जय पत्नी महरानी। कहाँ ले महिमा तोर बखानी॥३३॥
तुम रणचण्डी तुम ही सुरसा। तुम्हरी जीभ चलै जेस फरसा॥३४॥
तोहरे जरिये ठनाठनी है। पूरे घर में तना तनी है॥३५॥
जौ तुम रूप धरौ बिकराला। बन्द रहै फिर किचेन में ताला॥३६॥
जान चुके हैं राम सवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥३७॥
शिव के अद्भुत रीति निराली। बगल में पत्नी सिर पे साली॥३८॥
इहै रीति जो हम अपनाई। घर में कइसउ घुसइ न पाई॥३९॥

तनहा तोहरी सरन मा, जग के देहे सनेस।
पत्नी सुख सिर ताज है, पत्नी कठिन कलेस॥४०॥